



कचरे का बादल

लेखक: करनजीत कौर

अपनी सारी दोस्तों के बीच चीकू सबसे दुखी थी। निश्चित रूप से वह अपनी कक्षा की सबसे दुखी लड़की थी। शायद वो दुनिया की सबसे दुखी लड़की थी।

दोस्त? चीकू का अब कोई दोस्त नहीं था। चीकू के साथ कोई खेलना नहीं चाहता था। क्योंकि उसके सिर पर हमेशा एक बादल मँडराता रहता। कूड़े-कचरे का एक बादल। संतरे के छिलके और बिस्कुट के खाली लिफाफे, टूटे खिलौने, और पेंसिल की छीलन, प्लास्टिक की टेढ़ी-मेढ़ी बोतलें, और रंग-बिरंगी प्लास्टिक की थैलियाँ, और इन सब पर भिनभिनाती मक्खियाँ के झुण्ड।

कोई भी बच्चा ऐसी लड़की के साथ नहीं खेलना चाहता था जिसके सिर पर हमेशा कचरे का बादल मँडराता हो। कहीं कोई केले का छिल्का तुम्हारे सर पर गिर पड़े तो? छी! चीकू तो छुपम-छुपाई तक भी नहीं खेल सकती थी। क्योंकि बादल उसका पता बता देता था।

एक दिन वह सोना से बोली, “हम साथ-साथ स्कूल चलते हैं।” सोना तो फ़ौरन उलटी दिशा में भाग गई। “क्या मैं तुम्हारा ‘पेंसिल शार्पनर’ इस्तेमाल कर लूँ?” उसने स्वीटी से पूछा। स्वीटी मुँह बनाते हुए अपनी जगह बदल कर आशा के पास बैठ गई। चीकू को दोपहर का खाना भी अकेले खाना पड़ा।





चीकू जानती थी कि उसे अपनी अम्मा का कहना मानना चाहिए था। अम्मा हमेशा उसे कूड़ा फैलाने से मना करती थीं। “सड़क पर केले का छिलका मत फेंको।” “बिस्कुट के खाली लिफाफे कूड़ेदान में डालो।” लेकिन चीकू ने उनकी बात नहीं मानी। वह बस हँसती और कूड़ा फैलाती रही।

फिर एक दिन अम्मा को बहुत गुस्सा आ गया, उन्होंने कहा, “देखना अब यह कूड़ा तुम्हारा पीछा करता ही रहेगा!” चीकू बस हँस दी। अगले दिन जब चीकू सोकर उठी तो चारों तरफ़ मक्खियाँ भिनभिना रही थी, हर तरफ़ बदबू ही बदबू थी। साथ ही सिर पर कचरे का बादल मँडरा रहा था। अम्मा की बात सच साबित हुई! और उसके बाद चीकू हँसना बस भूल ही गई!

चीकू ने भागना चाहा। लेकिन कचरे का वह बादल हर जगह उसका पीछा करता रहा। चीकू ने एक झाड़ू लेकर बादल को हटाने की कोशिश की, लेकिन वह उसे हटा ही नहीं सकी। चीकू ने हर तरह की कोशिश की! उसने चीख-चीख कर बादल से हटने को कहा। उसने तो बादल को कूड़ेदान में फेंकने की भी कोशिश की। लेकिन कचरे का बादल हटा ही नहीं। तब चीकू हो गयी बहुत दुखी।

फिर कुछ अनोखी बात हुई। चीकू ने बाला को सड़क पर केले का छिलका फेंकते हुए देखा। चीकू को गुस्सा आ गया। क्या बाला को मेरे सिर पर कचरे का बादल नहीं दिख रहा? वह चिल्लाई, “अरे बुद्धू लड़के! छिलके को सड़क पर मत फेंको, कोई फिसल जायेगा!” कचरे के बादल से डर कर, बाला ने छिलके को कूड़ेदान में फेंक दिया।





अगले दिन कचरे का वह बादल थोड़ा सा छोटा हो गया! “अरे ऐसा कैसे हुआ?” चीकू को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर, चीकू ने देखा कि रीमा आंटी प्लास्टिक की थैलियाँ फेंक रही थीं। चीकू ने कहा, “आंटी, थैलियों को उठा कर दोबारा इस्तेमाल कीजिये।” रीमा आंटी थैलियाँ उठा कर वहाँ से चली गई!

अगले दिन जब चीकू सो कर उठी, तो बादल और भी छोटा हो गया था। चीकू मुस्करायी, वह समझ गयी थी कि उसे क्या करना है। फिर जब भी कोई बिस्कुट का पैकेट या लिफ़ाफ़ा या पेंसिल की छीलन फेंकता, चीकू उसे रोक देती। प्लास्टिक की हर टेढ़ी-मेढ़ी बोतल उठा कर कूड़ेदान में डाल देती।

गाँव ज़्यादा से ज़्यादा साफ़ रहने लगा। और चीकू का बादल छोटा से और छोटा होने लगा। फिर एक दिन वह गायब हो गया। एकदम चला गया। और चीकू अब शायद दुनिया की सबसे खुश लड़की हो गयी। उसके बाद चीकू ने कभी कूड़ा नहीं फैलाया। सच तो यह है कि उसे भी साफ़ गाँव में रहना अच्छा लगता था। लेकिन वह डरती कि कहीं कचरे का बादल फिर न आ जाए। किसे पता था!

समाप्त

Click below to follow us:



You Tube

facebook

